वन उत्पादकता संस्थान, रांची में वन महोत्सव का आयोजन

वन उत्पादकता संस्थान, रांची में दिनांक 11.07.2014 को वन महोत्सव दिवस का आयोजन विस्तार विभाग एवं वन कार्यकी एवं आणविक विज्ञान प्रभाग के सहयोग से किया गया| इस अवसर पर वन उत्पादकता संस्थान रांची के निदेशक,डा०एस० ए० अंसारी,डा० शराद तिवारी,प्रभागाध्यक्ष, कृषि-वानिकी एवं विस्तार शाखा,डा० संजय सिंह प्रभागाध्यक्ष, वन कार्यकी एवं आणविक विज्ञान प्रभाग, डा०एम०रोय प्रभागाध्यक्ष वन पारिस्थितिकी एवं भूमि प्रबंधन प्रभाग डा० अनिमेष सिन्हा , प्रभागाध्यक्ष बृक्ष प्रजन्न प्रभाग,डा० अरविन्द कुमार,प्रभागाध्यक्ष वन सुरक्षा प्रभाग, श्रीमती आर० एस० कुजुर,श्री एस० के बकसी,अनुभाग पदाधिकारी,अनुसंधान पदाधिकारी एवं कर्मचारीगण द्वारा संस्थान के अग्रणी उद्यान (Lead Garden) में नीम पुतली(*Mallotus roxburghianus*) नागकेशर (*Musea ferra*), मिलिया दुबिया(*Milliya dubiya),* हरश्रृंगार*(Nycanthus arbostris*)एवं बांस प्रजातिके सौ से अधिक पौधों का रोपण किया गया| इनमे से नीम पुतली (*Mallotus roxburghianus*) नागकेशर (*Musea ferra*), की प्रजातियाँ झारखण्ड राज्य में बिलुप्त प्राय एवं दुर्लभ हो गयी है|

नीम पुतली के पौधों में एंटी आक्सीडेंट एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है एवं पारम्परिक चिकित्सा पद्धति में इसका बहुत महत्व है|नागकेशर का बृक्ष जो कि अपने विशाल आकार, लकड़ी की कठोरता एवं भारीपन के लिए जाना जाता है, इसमे भी अनेक औषधीय गुण पाये जाते हैं एवं इसका प्रयोग गठिया,मूत्र संबंधी रोगों के उपचार में होता है| अबतक संस्थान के अग्रणी उद्यान में करीब 300 से ज्यादा औषधीय एवं लुप्तप्राय का संरक्षण किया जा चुका है| संस्थान द्वारा इन प्रजातियों का बृहद स्तर उत्पादन कर अन्य स्थानों के लिए भी इनके पौध उपलब्ध कराये जाते हैं|

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा०एस० ए० अंसारी, डा० शरद तिवारी ,डा० संजय सिंह आदि ने वन महोत्सव पर विचार व्यक्त किये | इन्होने विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण का महत्व बताते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि किस तरह इन प्रजातियों का संरक्षण दूषित पर्यावरण तथा मौसम परिवर्तन से वचाव में भी सहायक होता है|